



अब तो यह हा पेचारा तुम उठा रहो हैं और नरकों से भी ज्यादा  
 ग्राम मोग रहा है, क्यों जी नरकों में इससे ज्यादा क्या दुःख होता  
 होगा जोदो हम तो यह कहते हैं कि मुझ मय की ही लाज रहे,  
 और किसी को भी ऐसा मुदनाज न बनाये जो सबके सामने हाथ  
 पसारना पड़े और फिर भा खुद न मिले, और घासकर इतना  
 जगों की औरतों की इज्जत तो तू ये पागपरवरद्वारा नकर ही  
 पचा और उनका पदा मत उठा गंगाजी में क्या कहे तुम मुद  
 जानते हो कि इस सुमगम चौदान के यहा क्या सच पदा था,  
 उनका औरतों का घर से बाहर निकलना तो दूर रहा कोई उनका  
 गद्दा तक जा नहीं देय मबता था अब यह उस ही के पटे का  
 नवान बट्ट है जा मय के सामने जगता दुगढा राता फिरता है और  
 कोई नहा मुनता है, सब कहता हूँ मेरे तो भास फिर पडन है  
 जय में उसका यह हालत दुगढा है, लालना सुपराम ने मुद्दारे  
 बड़े २ कारण सुधार है अंडे बन में यह मुद्दारे बहुत काम आया  
 है, अब उसके हा पेटे का यह पर यह बुरा घत पना है इस घाम्त  
 अब तुम उसके काम आभा यह मुद्दारा काशकार भा है इस  
 घाम्त जिस तरह होसक उसे निभाओ और खुद नहीं तो मुदनाज  
 और बकम समझकर हा कुछ सहारा लगाओ जिससे यह दरदर  
 भक्तनी फिर स सब नाय और छे महाने घर में बग्नर राय  
 जो उसका यह छे महाने कट गय तो फिर तो उसका काम चल  
 निकलगा क्योंकि अरका पार ता में जानें से हल बेल मागकर  
 उसका मत तुतना हुआ और फिर फसल आने पर बेतकी पैदावार  
 से ही उसको दो बेल लूगा, जो उसका काम चल जायगा और आगे  
 का और ना यह जायगा, और उसका पदा नका का दना हा रह  
 जायगा गंगा ने कहा कि मुझे तो खुद उबर है नहीं मुद्दारे बगने  
 से और यह तो सारा का काम है इस घाम्त इसमें तो मुल किसी  
 तरह का उबर हो ना नहीं सकता है ऐशिन म यह सोचता है कि



भी वरिष्ठ लोग को सुख का सामा हो निजता या भीर बिना  
लज्जा का सद्व्यस्तुता थी ।

जग के पास में उठकर पर जो हृदय बटवारी हीन होकर  
सोचता जाता था कि बरगति पर क्या करने के सामने तो जग  
ने दोकते मर २ सत्ता को विचारकर सुमाना शुरू कर दिया और  
सुखरान को देने का बहुत पर क्या भाई तो उमरत जमान छीनकर  
उमरत बदन पर हुरा चलान का बदवार बांधन जग पर तो बहुत  
हा गर्जित किम्वद का क्या है, पर क्या इन जोगों का धर्म हा पेमा  
क्या सिखाता है फिर बखाल जाता है कि पेमा ता बाई धर्म हो हो  
मारी मकता है वरिष्ठ मुझे तो पेमा ही मादुमहाता है कि जितना तन  
हमारे सुख-सुखों में भी वरिष्ठ मज्जर लाम दुनिया को जगने क  
धामन दण्ड दानदाय बरमान द पाया वक्त निमान वरन है। क्या  
मिन्न म गड रगर माय में माल हाल जेने है और हर वक्त हाथ  
में लकड़ा कि ररन है और मकर वरन का जग रंगकर भाते  
जोग का गिहार करन ररन है इसही किम्वद क यह लाला मालूम  
होन है वगुला भा ता पाता में बटो एक हाथ के बल लडा रगता  
है माना कोर लडा हा वरन हुर है लज्जित ध्यात उमरत मज्जो  
का हा लज्ज जग ररता है मज्ज पास आई और इसन पर  
दयाता इन हा धामन तो जग जमनादाम जैस मगतां या लाम  
वगुन भगन कदा है, माइ खुदा वगुन इन लामों स धर ता पडे  
हा मगरनार है पेमा हा पर यह है ताटा बजगाय जो सुख से  
उठकर २२ वन तक गिराने पर ही पड ररने है नहाने धोने में ही  
धर्म समझने है और किमा स भ न पहला नक भा नहा सुमाने है,  
लेकिन बेहमान एम है कि आदमा को शिर से पैर नर गिरा जाय  
और टकार न न लें, मोचद - भाई उमरते तो फाटो जा कोर  
मतर मान है दमानो उमरते बने २ जुमकिय है और किम्वद पर  
उताड़ है, तापको जग जमनादाम का बातों स तो भय यह हो



मेंट करती और बुला पिला मे भी फमत समझकर हर तरह मे  
 सताते और दिव करने लगी यदा तब कि उस इस लाइली यह  
 के कारण उनका घर में बैठना भा मुश्किल होगया और उनका  
 जाना भा भाग पड गया तब तो उन सबों ने यह ही निश्चय कर  
 लिया कि इस मुशकल से तो यह हा बेहतर है कि भलग होनाये  
 और अगर लागतला कुछ भी बांखर तब तो भाग भागकर हा  
 गुजारा कर लेये या मिटल मजदूरा करव हा करना पेट भर लेये  
 या इस नित्य की धुका फजीहमी और हाव हाव मे तो सब जम  
 माराम मे उतरी बुनेग समझला कि गुन धनी मतद या यमो  
 पर जाकर क्यों इस घब घषाये घर को मरतन और बागबाग  
 बनते हो इस घर में तो ना कुछ है यह सब मुदार हो जानते है  
 तब तो कुछ दिग्घर घरकर लपका है और गुनारी इन मतर् मे  
 हम तो जान कि जो कुछ ना लाइल बेतल है और सौ दट मर  
 यो-रत दन द हृष बना घर और मुनिग को लुगार लगीट कर  
 तब तो यह सब मुदार हो लिये लगे है तब मुदारी हते की  
 ब न हो उतार मरदट मत है इस लाइली दथो यानी निद करती  
 है यदा हाते पर अब समझ भा लायगा तो भाग हा लाया होला  
 यता और जो उतरीकली समझ न ता भाये नाभी कसरिया ताये  
 भव तो यह समझ हा लड़ेगा भयला हुआ ना और गुन-मुभा तो  
 भव ना य मरद पडला यह है इन पावन भव ना य निनना हा  
 पड़ेगा गुन मुल ता दयो मे बीना ५ उनका मदता है और गुह  
 क भा मुद पकर बेर मरता है मरता यदुन हा भाग पाव का  
 उरय हुआ था तब हा तो मेग मरग मरग यह और इस मुनये मे  
 दिहात करान का सहा और दिन मरद बेने या लाता पर एक  
 कदन का राकर बिद द हा मुबताम मरगा और मुभता भा  
 पाव कड मुनिग मे हाता और ता मे मरगा न हाता और मरे  
 गुने कि भाते को न हाता और मरा निम्न न दूग ना हाता



जमानादास के घेरे धपन बाप से भलग तो होगये परन्तु इससे  
 ज़्यादा और भी ज्यादा बड़ गया, क्योंकि सब एक ही हंगेला में रहते  
 थे इस बास्ते औरतों में घानघान में तकरार होती थी और जमाना  
 दास के घेरी की बधुओं को इस बात की बड़ी शिकायत थी कि  
 सासुरजा ने घर का सारा माल तो अपनी नई और के हाथ में  
 रखा है और हमको जैसे ही हाथ पकड़ कर निगाह दिया है और  
 हाथ डट्टाई कुछ नाम मात्र को देकर हाथ डाल दिया है, इस ही  
 बास्ते भव यह औरतें न तो अपनी नई सास स डरता था और न  
 उसका कुछ लिहान ही करना थीं बल्कि सीतनों की तरह से  
 आमने सामने होकर लड़ती थीं और रात दिन यह ही ऊधम  
 मचाये रखती थीं भागवती छोड़ी उमर की बच्चा तो थी ही, इस  
 बास्ते जमानादास के लाड प्यार और हर वक्त का खुशामद से  
 वह पैसा बचोला मुफ्त जयादराज निलज, पैदरी और  
 येनमाज होगई थी कि लूने में भट्यामियों और कुजड़ियों की भी  
 मान देना था इस बास्ते मंडीस पनीस गला मुफ्ते और गिरादरी  
 की औरतों की इनका गढ़ना एक प्रकार का पैदास का तमाशा  
 हो गया था, यह भा और इनकी छूब ही बंधाता और मडकाता  
 थी और गढ़वा कर मला घगा तमाशा देखा करता थी औरतों के  
 लूने का प्रभाव जमानादास और इसका घेरी पर भा बहुत कुछ  
 पड़ना था और यह भा भापस में सिजते हाथ जान थे जमाना  
 दास को अपनी औरत स तो हर वक्त सबको जिडक और हजारों  
 मालियों का बौछाड़ के सिवाय कुछ भा नहा मित्रता था इस  
 कारण अपना औरत के सामने तो उमका कुत्ते से भी अधिक  
 दुदरा रहा था, पर यह तो उसको जाने बर्गे से भा चैन नहीं  
 मित्रता था क्योंकि घर तो यह भी इसका परा २ मुकाबिला करने  
 लग गये थे और बच्चा पढ़ा करा भोग मय कुछ हा मुनास में  
 और हंगेला में जान पर इनके बर्गे का बधुओं भा यह भा होकर पर





मास पूट २ घर धाने हैं तब भरे पीछे तो जो न करें यह ही थोड़ा है इस धामन यह भय यह ही सोचना था कि भय नागदाह अपना जोर के ही नाम करदू और इस हा को भय कुछ अधिकार दे दू जिससे मेरे पीछे इसका गुजरान मंगा भागि होता रहे और मरी भिड़ा नगव न होता रिने फिर सोचना था कि यह भीरन तो छोटा भी बघी है नाममक नादान है और इसका भार बहुत हा आदा धानक और मडार हैं यमा न हो कि मेरा यह माल न मेरे पैरों को हा भिने और न मरा जोर के ही पाग रुई बलि यह दामनहि ही आये जिन्हीं भयभी बदिन के बहने में पूरे पाग हा दजार रुपये लिये थे और फिर मा भयत नहीं माया था गरज इस ही उधेदुवन में न उस दिन को पैर था और न रात को नीच बलि मोन ही मोन में यह घन = घर निरा हाथों का पित्र हा रु गया था और भागन मरन क दिन गिता करता था ।

### अध्याय ३

उसका जोर का यह हा = न कि मान भाग क बाद न मान करता नव तो यह बहो जाने धानी म हा आ बालाया रहा और बलिवा धाने बदिन म बदिवा बगड और बदिवा म बदिवा भयन हीक क सामान मित्रन म कुछ मुश हा हाता रहा और जमान नाम के साथ कुछ लड़ घर और इस मनावे के साथ बलता भा रही नेविन १ - १६ बलन का उमर हीक घर उधे उमका मायूर जयाना भाग्य तो उमको लाल मायब म पूछा हाता गुरु हागार दगा तक कि भागि गता = कुछ दिनों में उमको लालका काजल देयकर ही गुमता भाने लाल और यह उमकी इमम क के उधे उम उम के हाके बलनन मयनक कि लाल उधे लाल इस उमन उधे यह घर के भन्दर भाता ता यह देमकाय भा उम पर दाम लाला ल और



मय रपया छान ले जायेगे और भगडा उठाने पर अपने पाप से  
 भा अपना हा पीला बुझायेगे उन सब नृपुत्र भा न कर लयेगी  
 और रो पीड कर हो बैठ रहेंगे, हम चास्ते इस तेरे रुपये का तो  
 सर लाय गना हो टाक नहीं है हम इस रुपये को ले जायगे, तेरे  
 नाम के नमस्सुख लिखायेगे और साल भर में हा देने कर दिना  
 पैस, मरन हम तरह यहा फुलगाकर उमरे भार्यों ने भी उसका  
 सब करया करने पदा गेना और दूसरे ताकरे महीने हा बहुत  
 कुछ गना देकर पद पदना रुक कर दिया था कि यह अब तक  
 के धात्र में समूह हुआ है भागे को और भी ज्यादा पसूल होगा,  
 इसके अगला भय उमने भार्यों नहर मौसम का धन की पैदावार  
 जैम कच्चे घने के टाट, भुने हुए होने गेट्ट का ऊमा कच्चे पक्के नाम  
 मुना हुआ लस मका क मुहे, कजर धान की खील, गन्ध, धौंडे,  
 ताजा २ गुड शकर राव और रम क पहे दूध दही ताजा घा और  
 भी पैसा हा पना बहुत चात्रे उनके नाम भिजगना शुरू कर दी  
 थी और बहुत लग गये थे कि यह सब चीजें तेरी मातामियों से  
 भाना गुरु होगई हैं, निमसे उतकी पूरा यकाव होने लग गया था  
 कि मेरा हा या कान पर उठने ला गया है इन चात्रों के पडुवन  
 से अपनी बहिन को भुग देल पर पाइ हो दिनों में उसके मायों  
 ने पैसा तांगा बाप दिया था कि रोज एक न एक मादमा बोर न  
 कोई चीज लेकर पडुव ही जाता था जिससे भण्डा पूरा पूरा  
 साठुकारना बन गई थी और उसका कुछ रक्का उसका कोई चीज  
 ले गये थे।

लाजा के हाथ में से सब रक्का मिट्टा लेर क काने भण्ड  
 पता उससे पा क सब के उमने हा उठ बाय मायों रहने  
 था और अकाल से उकमन हुए कुछ सौ नंबर खेरे हा  
 से उगकी मांने दैर से दमने न बने हां हां और नि  
 हर पन लाय उठने रक्का हा उमने हा उमने हा



चुका है उसने मैं नहीं भागता है फिर सी रूप पन्नाही के भागे  
 रघुवर बहने गया कि भापे तो यह भय लो और भापे फिर  
 भुगताहूँगा, इन रूपों को देख कर पटपारा बहुत घबड़ाया और  
 बहने लगा कि माला खाद्य अब मुम मौकम तोड़ा का मामला  
 हो चलाना नहीं चाहत हो और चलाया भा तो अब मैं ही तुमको  
 किसी किसी का मदद देने ल इनकार करना है नय यह रूपों के  
 अमनादास न कहा कि भा तुम हमारे दारिम हो और हर वक्त  
 काम भाने हो, यह मामला नहीं चला है तो १ सही, किसी दूसरे  
 मामले में समझ जेना, हमारे तो रोज हा मामले रहने हैं, पर जो  
 पण्यार "पान" निर" गया उसका तो भुगता हो होजाता  
 पहल है, पन्नाही ने कहा कि अब कोई दूसरा मामला होगा तब  
 जैसा मुताबिक होगा देखा जायेगा पर अब येमामने तो मैं यह  
 रूपों नहीं के मयता है, इस पर रान ने कहा कि अगर येमामन  
 नहीं लेन हो तो यह ही बात अपने जिम्मे लो कि रोज समझ  
 पर कोई ऐसी बात निबाउ देंगे जिससे इस भरता की वाकत  
 द्वारा भी काम वन जायजिग उस राउ फा भी कुछ नुस्खान १  
 हो मुम तो भार पन्नाही हो, उसका मौकम यनी रहने में भा ता  
 सी रमन घस निजाउ सकेन हो जिसमें दोनों का ही पायदा होना  
 रहे, पटपारा ने कहा कि मुझे तो येमा कोई बात सूझता नहीं है,  
 अमनादास ने कहा कि अब नहीं समझी है ना न सही महीनेने मलाने  
 में या वरत म दा वरत में अब नृसे तज हा सदा, गरज सी बहा  
 बनावर लाल अमनादास यह सी रूपों पन्नाही का देहो भापे  
 और पटपारी के दिल में भा अब धार २ यह ही बात भाने लगी  
 कि जो इना पूना पाठ करना है और हर वक्त अपने नियम धर्म में  
 हो लगा रता है किने हो सफता है कि उसने ही येमा गराय पेश  
 य यदा चोरा करार हो, जा उसन हो चोरी करार होना तो अब  
 यह इना भनान और भाउे वरतन का उसको बुझाना और फिर



मौजूद होते हुए तो राजरानी के यहां छोटी भी नहीं हो सकती थी, यह भरता और भरता, अपना जान पर खेल जाता और एक निनहा भी न जाने देता पर क्या करे उस दिन तो जमनादास ने कार्य बहुत ही जरूरी काम उठा रखा था और गाय के बहुत से चमारों को अपने यहां बुला रखा था और चारी तो हाना थी सो दोगर और जमनादास के दिव्य हुए दान में अब उस बेचारी का पेट भी भरने लगा लेकिन अब इन चमार को यह फिर पैदा हुए कि बिना बीलों के उसका जमीन जुने किस तरह, गाय के कोई किसान यह धरती जोतने को मांगते थे और गाला का लगान देकर राजरानी को भी सब कुछ देने को कहते थे और चमार को भी बहुत कुछ लगान दिनाते थे लेकिन यह चमार किसी व भी लगान में नहीं माना था और अपने को मासमक जान कर पार पार लगान के ही पास जाता था और उनमें ही मलाद मिलाना था, बिल्कुल भी न जुने पाये नाकि गान चमार न होने के साथ यह हिमरा कराकर सकार व हा बुझन से मोकन सुझा सक और रेखण्डे जमान पर अपना पामक, लकिन जाहिर में यह उनके ले को ही जाने बनाता था और बिना न बिना तरह इन मामले में दलता था, भाधिर जब गाय व किसी भा किसान को यह मीन न हा गई तो भौंठू चमार वहीं दूर दूर से शेरमिंद चौहान ले आया जो राजरानी के बाप का तरह का बहुत दूर का नेशर होता था और निमकी काफन उससे जमादार न हुए था और जिसको कोई जमान जोतने को नहीं मिल गया वह अपने हल बैल और सेतों का सब सामान ले आया और दास को असल में तो इन कारवाह का बहुत फिर हुआ जाहिर में उसने बहुत ही गुला दिव्या और शेरमिंद का





का दरारा लगाया शेरसिंह बहुत दौगल था कि कौनों लोगों ने मुझ पर यह झूठा इत्नाम लगाया और मुझे पुत्रिम में सिखाया, रातरानी भी बहुत धबड़ा और जमनादास के पास भयर भिन्न था उसने भी बहुत ज्यादा धबड़ाहट दिखाई और पुत्रिम का कुछ दे दिया पर शेरसिंह के अपने दश की चाविसा चले जाने की बात बताई और रातरानी को भी उसके ही साथ चले जाने का मलाह बनाई लेकिन शेरसिंह के पास तो अपने गाय में जाकर गुजारे का पाह भी सूतन नहीं था इन वालों कुछ भा हा उसने तो यहीं रहने की दहराई और पुत्रिम को दे दिलाकर राजी कर देने का हा बात जमाई।

## अध्याय ५

इपर सों यह मामला चल ही रहा था कि जमनादास के यहा उनकी घर वाली का सान सों रुपय का साने का हारशुम होगया, जिसके कारण भागवता ने शेरगु मचाकर और सों घोकर घरता भावाश एक कर दिया, जमनादास ने सुरम्न हा गेब का बात जानने चाहे छानियों की बुलाया और उनके द्वारा छोरी का सुराग खलाना चाहा उन लोगों में से किसी ने कुछहली बनाकर, किसी ने घड़ा फिराकर, किसी ने मिट्टा उट्टाकर, किसी ने चावल चपाकर, किसी ने उट्टा क दाने मगाकर, किसी ने अपने हुए देव को मनाकर, किसी ने शिर हिलाकर और किसी ने लाल लाल भासे बनाकर चोरा का पता बनाया, इनमें से किसी का कहना था कि माल घर में हा घरा है, कोई कहता था कि घर के ही किसी भादमा ने यह काम करा है, एक पता देता था कि यह छोरी एक राठ भीरत ने ही करा है, और दूसरा यकीन दिलाता था कि एक जवान पुरुष ने हा यह छाज करा है गरज गेब की बात बनाने



मन्थानाश मिटा कर ही धवना जमोदाग बनाया है, पर यह पाप का नाश कदा नहीं पैरना यह सबकी है ? हम धाम्ने भव तो यह दा मातूम हाता है कि उसका यह पर भानुमता का भा तमाया भीर पिङ्गी कागा यमवारा खतम हापर उसका यह कारणाया रने की दापाद की तरह एकदम बैठ जान पाला है और भानु में पादियों का जो हाउ होना है उनका हो तरह यह भा एक एक दाति की तन्मता दिले पागा है और कागा हापर भीर यदन में कीडे पड पर नहीं क मदा काम भोगन पागा है क्वाकि 'गगान' के द्वात ॥ हेर मो है पर अघेर मही है इस धाम्ने ना जैमा करना कीता उनका पा मा एक न एक दिन भवश्य हा भोगेगा इस पर दूसरा बाना भा कि भाद मुमडा भवत नहीं है जमोदाग ईश्वर का मया भन है और भरा नियम धरम पर पूरी तरह कायम है इस धाम्ने प काम नही भानु सबका है बलिह दिन दूती और नाम कीमुना तादा हा बाना गला जाता है भाई साहय भगवान् गगने भयो का पूरी सबर लगा है और सब तरह उनका रगा करता है, दाले नहा हो कि भांधा जय साह में हा जाय पर जमोदाग को गि निकलने हा महाना विर अदिकी में जाना भिरे ना तीन घंटे पूजा पठ करके हा पर भाना और मही हा बादे यमी हो दुस हा सा सुग हा ना उनका भानु महान प ने और निय की मुनि शिवा ना मनी दाना य धाले गागा धोश हा जाना है भाद भगर ऐसी को भा दुस हान लग ना विर धरम हा दुनिया में क न कर हा क्यार का बात मो जाह बीन पमा है ओ हो ऐस कामने के पाप हा पतेद मही करता है य ना गृन्धा का काम हा है हमने पाप का अ पुण्य का गज हा हा विरम का भनेर दाले पर २ और दुहात २ हावे गी भीर जमोदाग का वानो के पकी २ व हावे बीनने उज्जम ना ।



कर पीते हैं और बजार को हाथ भी नहीं लगाने देते थे फिर कुछ  
 दिनों पाउरे उड़ोने पिछदरी के जमीन ज्योंनार में यहा तक कि  
 चित्त रसोई २ दस अदमियों स ज्यादा ब चास्ते खाना पने उस  
 रसोई २ का खाना खाना भी छोड़ दिया था, गरन आहिस्ता २  
 यह दोनों पाप घेरा जेस चदा मा होगये कि मन्दिरजी में भी हा  
 का ताराफ हा २ य गई और लोग इनको भगतजी के ही नाम से  
 पुकारन लग गये, और कहने लग गये कि सादय मन्दिरजी का  
 उपहार तो इन्हीं की बड़ीलत होरहा है, नहीं तो यहा तो तान २  
 दिन भा पूना परदा नही होनी थी धन्य है सादय इनको जी  
 धर्म में ऐसा ही लग ई है और भगता भगत सुधारने की ठहराई है  
 फिर गङ्गाधर स कहने कि पर्वोना तुम जपने छोट भेटे को नहीं  
 समझाने हो जो दशन करन भा नहीं जाना है और भाई चौदश की  
 भा दरी लाजाता है दूसरा कहता कि तुम दरी की कहते हो मने  
 उसको बन्दमूल तन पाने दखा है, इस पर तीसरा कहता है कि  
 इसमें इनका क्या बसूर है यह ता इस ही कारण उसको घर में भी  
 नहीं घुमने देते है और उसने बात नक करने के स्थान पर नहीं है,  
 इस पर सब लोग कहने लगते कि धन्य है सादय इनको जैसी धर्म  
 का कमाव कर रहे हैं भागे की इन्हीं ब काम भावगी, इस पर कोई  
 कहने लगता कि भागे का करा, अभी देख लेना कि दिन २ किसी  
 बूझी होनी बनी जारही है और उधर उस मधुरादास की देखो जो  
 दूसरों के दुकड खुगता है और पाउरेवार २ रुपय की नोकरी करता  
 रिता है मन्दिरजी में अब कभी भा शाटर होना था तो यह  
 दातों अहर जाने थे और शाटर का बधन सुनकर यही भ्रष्टा के  
 साथ याद २ यह कर फिर दिजाने थे मगर अफमोस है कि तन  
 कथना का एक अहर भी नहीं समझ पात थे और न समझना ही  
 चाहते थे बल्कि जो शास्त्र में लिखा है यह हा सत्य है ऐसा अत्य  
 श्रदान रखता हा काफी मानने थे और अपने को सच से बडिया

2

1

1

चंडी मुन्दी भैरों काला आदि हिन्दू मुसलमानों के भी सब ही देवताओं का मनाने थे मुसलमान मौलवियों और स्थानों चट्टों स गड़े तापीत्र भा बनवाते थे और जादू मोना और जंत्र मंत्र मा यहन कुठ कराते रहते थे, खैरान भी यहन कुठ निहालते, ये और किसी भा भेषधारी फकीर का अपने दर से घाला नहीं जान वेते थे ब्राह्मणों से आप भा कराते थे मुसल्लो भा निमाते थे शहादों को कबरो गर जरी भा उढाने थे और ममचिदों का तेल बत्तों के लिय ऐस भी दिखाने थे इस घास्ने सब हा लोग इनका जस गाते थे और लरा पूरा पूरा धमात्मा बनाने थे।

## अध्याय ७

इसाह के तीन साल पाउं बुद्ध रामानन्द का बहात होगया भीर बरवा १७ वर्ष का बालिका रामकला विधवा होगई, रामा नन्द और उसका दा गोटो भाइयो लीलाराम और गुगनचन्द्र का सब फारखता और खाना पाना इकट्ठा हा था और रामानन्द के बाद भा उन्होंने इकट्ठा हा रहना चाहा लेकिन रामरानी को यह बात जिम्मा तरह भा मंजूर न हुई उसने तों भलग होजाने का ही ठान ली और एक तिहाइ माल बाट कर दे देने के लिये निद करन लगा और अब बहुत कुछ सम्भ्रमान पर भी यह न मानो ता गचार यह लोग इस बात पर भी रात्री दागथे कि कागस्थाना तो इकट्ठा ही रहे और यह आमन्तो का छुन तिहाई हिस्सा लेता रहे और अग्य रहकर उसको जिस तरह चाहे सब करता रहे, लेकिन जमनादास को यह बात किसी तरह भी पसन्द न आई और उसने अपनी बहिन को सब हा ताल पट्टा पन्ना और मुन्दमा लहाने की ही बात सुन्कार बाखिर लगातार होकर उन लोगों न यह भा क्या कि हम सार भारतना का एक तिहाइ हिस्सा भा





[illegible]



पापा था और उसका धार प्रसार का लुप्त करने का मौका मिल जाता था ।

इस मुस्लिम की पैगम्बी में उरनी नयेर जगत के रईमों मर्तों साहसियों और धर्मो दैविकता में मिलने और एक - दिन उरन साध रहे का भी मौका पडा था जिनमें से बहुत - कम भा ध निराला रोशनी का दिन पड़ता था तबय कसाय और रहने अरु म से हा हुआ करता था इन कारण तमनामान का भा उन से पड़तय और मने पने थे यह उरन मयस्य सामे पाते की मयस्य ता मिली मिली । बहुत कुछ कुछ करता था और माक भी निराला कर ता से न था तबगाता हा निराला कर ता था तैमिल - निराला के मने का तात तात हमा मयस्य और धानधान उत्तम मा मयस्य मायसी की इस साम्य की पना । पानर पद मा पद आ हुता था और पानर ध मा ध सामन कुछ ही हाता रहे दिन पद पना न मदा हुता था, पद लोग भा उत्तम । धाना सा मयस्य न ध और न न पान हा जगत न ध धे जमादान भा मयस्य निराला हा हुता जाता था और धाना मदन में हा तात उरन सामि तात हाताता था - निराला मयस्य कुछ हात ता भी धन कानी निराला धम को पना ना न न मोदता था और उरन मयस्य ज्ञान का निराला तात का हाथ न ध भा मयस्य पना था और धाना गुन निराला का पना न ध मयस्य निराला था दि पदय ध मयस्य म हातात ध धाना मयस्य मयस्य मयस्य कुछ ही हाताता था धाना निराला मयस्य था और मयस्य मयस्य को मा धन मयस्य मयस्य धाना था और मयस्य मयस्य मुद और धाना मोदता निराला में जाता था ।

इस प्रकार इस मुस्लिम के कारण नयेर जगत के रईमों के मुता बान का पद मयस्य मयस्य मयस्य हा हुता निराला मयस्य मयस्य का निराला हाताता मोदता मयस्य मयस्य मोदता का ता उरन



संज्ञायां यत्नाने ये कर्मों पर चरा उठानेये जुमें क रीत मुसहरी  
निमाने ये चरा मुडा काग मरौ गादि दग देयताओं को मो मना  
रवा था लेकिन शराय का धान और चरा अन्न दाग से उठाने  
में मरवाता था इस धान्ने पुडावियों का नकद दाम भुगत देता था  
कि यह धुआँ से स मुद् हा धान - दयता का भोग लग्ये और मय  
के सामने ग न न गाये ।

गान चमत्काम में मय हा धम क देरा देयताओं को मनाया  
था, और धारों तरफ मंका का उठा देयता था, धटे २ नापीज  
बाध कर चमत्काम में जाता था शक्तिमें पर मय चलता था चर  
हा में यहा बहा बुद्धि का था उसने समझा क देयरीं पर  
मुठ गा चमत्काम पर अपमान है कि कोई भा लदवार काम न भाइ  
और धना दनाइ धान जी मगाई याना मनाइ न सामानइ  
और उनका भाव्यों का मार कागाने का मालीदार उठराया  
और उन नाओं का हवडा हा धान धान और हवडा ही रहन  
सग मित्त काके समानइ क भाव्यों को हा मार बार  
गां का मालिक बनाया और समझा के रहने क धान्ने  
मय छाटा का मजान ह धन और उनके रोग काटे  
के धान्ने पगाम रवा मदाना दन रहने का दुख मगाया इस  
बाद धान्ने को मुनकर उमनादार क सो धरौ मने में धरना  
निधन हू और धन धरौ मगाइ धान्ने म नये मिर धन गोगी  
ने धरौ मुश्कि में उमका उठाया चमत्काम धुपाया, मुद् पर  
धनो क छोटे दिने धने धन विपा मय कूट होश दिवाने भावा  
और उम समझा में दन दुख मुना मो धा मो धट २ कर नाज  
होगा उम मने देयरीं को धुप हा दिग म उठा बोला धीर  
हा मवार २ कर बाह कि हे मगाइ ! ह निर्दोश के नाथ ! नून  
तुम दुनिया की मो कूट न तुनी पर मय मो जी नर में कूट मर  
है न उम मने धन मर नये उमको मारा कदूर हाट होजाये



एक पैसा भा पुलिस धागें को नहीं दिया, सारा अपने आप ही हजम कर लिया घटिक जहा तर हो सका उसका बिछाफ ही पैरवी करी और उसका बदमाजा में चालान होनाने की हा रपोट कराई लेकिन कताी हादस ने अभा यह मामला चगन लापरन समझा और एक दरम पाउं फिर दोशारा रिपोट करने का हुकम भेजा ।

इस तरह यह आपन तो कुछ हलका हुई पर छोड़े ही दिनों पाउं यह बेबारा शेरनिंद और रागराग इसस भी बढ़िया एक दूसरी आफत में पन गय अदरा बार पुलिस में उन पर यह इत्तना जगाया कि रागराग ने शेरसंद ॥ बारयाना लगाया, गम रलाया और फिर उस गम का गिराया गाज का दारि मंगम घमासी, धोत्र कटारी और कई महीना पहाला इस बात के गवाह बने और मामल का तन्त्रायान शुरू हाय, इसमें शक नइ कि रागराग २० २१ दरम की जमान दया था और शेरसंद भा ३० दरम का जमान दहा था निजका व्याह भा गही हुआ था इस घायल इन पर जा कुछ भा गर किया जाय यह थाहा है, लेकिन सच बात यह है कि रागराग धनियों का रिषों जैसी नहीं थी निजका व्याह नी दम दरम का हा उमर में हागना है और तानरे साल गीता हापर तेरह चौंइ दरम का उमर ॥ हा बच्चे का भा बन जाता है और अपने कामक धम का जरा भा नहा धामन पाती है घटिक था ता पैस रागपून धरान का बे । था ओ रण में शिर पगना ॥ भागा धम समभने है और नगरा की शाह के सामने हा भपता छती मडात है निजकी श्रिया रण में पाठ दिसावर भागे हुए बापर का तुलमिण धा । का निम्नत उस शूमा की विधवा बतना पमद करता है तो युद्ध में उग रहता है और प्राण रहने तब मैदान में नहीं हगता है यह ता पैसा जानि म पैदा हुई थी तो १६ दरम स कम उमर म लइकी का और २० दरम स कम उमर में लइके का त्रियाह नहा करने हैं, इस घायल बाय के





नहीं है कि तुने अपना भी बसूर मालूम नहीं है थकड़ा सुन अगर  
 तू मेरे हाथ में मुझे मुझना चाहता है पर यह तेरा रोग धाना मुझे  
 नेक भा नहीं भाता है इस जाने आदमी की तरह मित्रता का बैठ  
 और अपने कानों को घेरे कि तूने मुझका ध्यान कर जाने ॥ वसुधा  
 से भी तिर्यकता का काम किया है और महाघोर पापा का बोझा  
 माने शिर पर लिया है पापा-तूने आह के दन-जग भी न सोचा  
 कि इस दन तेरा तो दुःखी बचाना था और मुझ पर अभी यह  
 ही जगती भानो थी तू तो उस दन ४० वरस का होकर अपने  
 पाने पोनियों को गाल में मित्रता का और मुझ १० वरस की  
 मटी बघा तो मेरा मा बाणों ने अपनी मोटा का निर्गता बनाया  
 था लेकिन हाथों गुन्गनों की म्याथ तूने अपने चार दिग के  
 मने का जाल मरा मारी नधानी गार म मित्रता और रुपये का  
 जेम निराश्र मेरा मारा ना महा डायन बना दाय हाथ ॥ निम  
 तरह को जेमा माद्वज अपनी पूज्य माय को वसुधा के हाथ बच  
 का लुरी से उरफे टुकड़े २ बरात है और उन टुकड़ों का पानार  
 में शिरका कर गुमलमानों का हाडी बकशाता है इस हा तरह मेरा  
 मा ने मा रुपये का गाल में आकर अपना जान स धारा धरा को  
 तुम गदा कसाई का हाथ धरा कर तेरा गुणपे का लुरा ने मेरी  
 लमा जयानी को छूर छूर करवाया है और तुने उस गार स भी  
 पाना लइपाया है कौनकि माय ता उनकी ही देर नक तपता है  
 पतनीदर तक कि कसाई की छुरा उसकी गदापर फिरती है जिसमें  
 क घड़ा ॥ १ ॥ लगती है लेकिन मुझ पर तो जबरनस्त धम्म  
 का की धाक छुटियों को चाने हुए परमों घीत गये हैं और तब  
 ॥ मेरे प्राण नहीं निरुद्ध हैं, तुम छुड़के के घश म पड़कर ता मैं  
 गुण्य योनि में पैदा होकर भी नकों के दुख भाग रही हूँ और  
 जेम प्रकार नारकियों के शरीर के टुकड़े २ का देने पर मा, घनी  
 ॥ पेन देते पर जो और तैज के बगदे म पसा देन पर भी उनके



का ऐसा ही बन्दायम्न बंधेगा जैसा बंध रहा है और एक एक  
 तिनके पर भापस में हम ही तरह छड़ा दिया होगा जिस तरह  
 छोटे छोटे बच्चों में हुमा करना है और सब बानों में ऐसा ही  
 गे- विडिंगा जैसा कि बंध के हाथों में पिंडा करना है इस घास्ने  
 बनमत चाह करके भी घर के अच्छी तरह चलने रहने की उम्मेद  
 करना और सुख शान्ति की भागा रखना गये के सौंग बाक के पुत्र  
 और भाग्य के पूजों का भाग्य व समान भस्ममय है जो कमा पूरी  
 नहीं हो सकता है इस घास्ने जाधों अपना घया दया और फिर  
 कभी ऐसी बात मत पूजे अंत में इनका और भी कह देनी है कि  
 जो लोग मनमें विवाह करते हैं और ३०-४० बरस के होकर भी  
 बारह तरह घरम का छोका को धाद राने हैं उनके हृदय में तो  
 दया का बंध भा नहा जाना है इस घास्ने उनका घमान्मा बनना,  
 हरा सज्जा और कदमूल का छोड़ना रातको अन्न अन्न करना  
 और पाना छानकर पाना सब बाहर का दौंग और गाय दिवाया  
 हो है दुनिया का टगन के घास्ने हा उनका य० गारा साग समागा  
 है गगनान पेन पाखण्डियों व बदकाने में नहीं आ सकता है और  
 ऐसी का पूजा भक्ता स बाधा नहीं हो सकता है क्योंकि जब उनका  
 हृदय हा पत्थर भा कगार है तब उनके परिणाम कितना तरह भी  
 घेन महा न सक्त है जिसम उनी विखा प्रकार भी पुण्य की  
 प्राप्ति होमरे और डाया जिय ये घम त्रियाये घन सरे इस  
 घास्ने तुम अपने घमा-भापने के घमण्ड में भा मत रहा। बरिज  
 यह हा निधय रगना कि छोटा भा छोटी की छाह लाने से हमारे  
 परिणाम कमाइयों जैम ही बटोर होगये हैं और उन अपने बटोर  
 और निम्न परिणामों के अनुसार ही हम महापाय कमा रहे हैं  
 और नकों में जाने के सामान बाध रहे हैं जमनादास अपना पोरु  
 का यह तगरारमुनकर मुह नाचना यह गया और मुज होकर पुत्र  
 पाग बाहर बैठक में आ बैठा ।



पर सा दिन गई थीर उसरी बुराई सब हो जगद फैल गई, फटे  
 हमका यह दुआ कि जगनादास को उधार मिटना तो द ह होगया  
 और जिसका तो थागना था उसका नवाजा शुरू होगया यहा  
 तक कि नागिनो भा होन गयो धीरे धिरा ॥ पहिले ही बुकी  
 करा देने का वागिसा भी का आग गयो इधर जगनादास भी एव ही  
 पहाया था गमने भी चढ़े २ पैर धर गयो पहिया बनाह, जाग  
 भुजगमिज भाग रगोद पसे मटार बनाये भयना गितत स मुकरा  
 करे २ ताद व दमनगन बनाकर दित्याये, भयने होग्यों स मदी  
 नागिनो भयन ऊपर कराह भयो मकान भीर नायदाह व हूठे  
 पैरान भयने गिनेश्वरां भाद भग मुलाकानियों के नाम गिने बहुत  
 गुण गान भाग्याह भीर दपया पैसा इधर उधर पहुँचाया भीर  
 भयने पसन का नय कुछ उपाय बनाया बाप का यह पय बहाद  
 में पहा था कि भीरो व ता दास ॥ गुण लपान पर बाहर जगना  
 दास प भागिर ॥ तब भयना काहिलो ग मली खका हर पय  
 पर ग मई लागका और नर न न मटारा बनाता हा गहा जिनसे  
 उसके मुकाबिल बात मछ पैगभा म दह जान ये भीर गन लग  
 जान ये भीर कभी न ने। एम दास मे धाजान से वि जगना हा गौर  
 गमान लग जान थे ।

जगनादास ने भयन मकान में बँध करार दानदा बाप  
 गोर का बुराई मगर भीर सब बहा पैसा और भाग भाग्याह  
 बाता कते जान का रग गिनई गिर थोटे हो दिती व से भयन  
 एक होमन से भयन ऊपर नागिनो कराह भीर गिगा म पहिले ही  
 जाने सब भाग भाग्याह की बुकी निबन्धाई गिनमे बाता पर  
 बाप भीर हाद दुकाह टगेम दाने पर मा गिण हा भीर दाने  
 का गन का दुरा पय मटार भीर गन मकद भीर गन भीर दाने  
 का दुकाह का भाग भीर दास भीर दास के बने दास निबन्धे दान  
 बाता बाता ॥ गहा गहा गहा का कहा न गो व नय जगना



हम घर पहुँच की एक भीरु ने समझाया कि जीवेगा भी रहेगा भी भीरु उमर मा यदुनरी होगी मू घबराने मत पर एक बात मेरे पेटे स करिया कि पांच बरस तक हमके बाल मत उतरवाइयो, जब पांच बरस का होनाये तब मान का जान देकर उस ही के थान पर पांच उतरवाइया जमनादाम की बहू ने कहा कि हाजा यह तो मैंने पहिले ही सोच रखा है कि मुझारी दया से जब यह पांच बरस का होजायेगा ता जाधे बाल ता हस्तिनापुर छेत्र पर उतर जाडगा तौर जाधे पांच माता के थान पर बटगाऊगी, मैं धारी उसका नाम पर माता का तो मुझे सच से पहिले ख्याल है, मैं तो उसका मुगा भी छुडवाऊंगा और चेंटा ( सुभर का बच्चा ) भी गिर के ऊपर को बिरगाऊंगा और मैं तुमसे मखा कहूँ मैं तो बालन्दर पीर पर भा भाडंगा और लौंडे के पिता को भी संग पैरा ल जाऊंगा, क्योंकि मैंने तो उनका भा मिश्रत मान रखी थी, खयर नहीं किसके प्रताप से हमको तो पाचपीं वार मैं यह पुत्र का मुल देवना मतीय हुआ है खा मैं तो मख को ही मनाऊंगी, हमारा तो सदा स सच ही न प्रनिपार करा है और अब भी सच हो प्रनि पाल करेंगे ।

## अध्याय १५

बच्चे के पैदा होने के एक हा महीन पाछे जमनादाम ने पाया का संच खगया और बहनों की अपने साथ लगाया, हम यात्रा में उसने बहुत ही उदारता दिखाई और संच में यह यात्रात्र लगाई कि जिस जिसा भी यात्रों के पास सच की कना हा यह हम से रपया तो और होमके तो घर ऊपर बालिम हो और न हो मख तो न दो, मगर कौन उधार लेता था मख ही के पास काफी रपण पैसा था हा उगाद उगा गज में खना उतरना होता था





गरज जमाआदाम के संघर्ष होने लगे संघर्षालों की बहुत हा  
 बुज सुवाना रहा और सब ही की यात्रा घटे आराम से होगई  
 यहा तक कि घर आकर यात्रियों ने अपना उन चालाकियों और  
 बेमानियों की बहुत ही बुद्धि डींग मारी हमने यात्रा में क्या २  
 एंड किया जिस २२२२ का धोखा लिया क्या - दृष्टपेक्ष केग,  
 क्या २ कुठ नेग, क्या २ लड़े कहा २ अडे गरज सब ही कुठ  
 सुन ने थे और अपना हा बात उठा दिखाने थे, साथ स्थान पर  
 जाकर दृष्टाने के मकान के निचे आगम में लडना, अरुन साथ के  
 मित्राय दूसरे संघ के यात्रियों की तद्ग करना सदा विजय पाना  
 और अपना काम बनाना यह ही सब जिम्मा बहानिया थी जो  
 यात्री लोग घातिस जाकर सुनान थे माना यात्रास यह ही राय  
 स लख आते थे और सुनान २ लख हो ही जाते थे।

जहां इला या बीर गादियों का सवारों हाना थी यहा जमाना  
 दास और अन्य भा कह धमाआमा गेग पैदल ॥ खला करते थे  
 और सवारों पर बैठता मंजूर नहीं किया करत थे, उस समय  
 उनका यह बहना होता था कि बीर घोडा आदिक् एगुभी हमारे हा  
 पैम जीन हैं जिन पर चढ़कर चलेम हिंद। बादीर जगता है येशक  
 इस हिंसा का हम निय नहीं मार सकते हैं पर यात्रा के समय तो  
 हम इस बहाने हा आमाना स बचा सकते हैं यह बहाने यह  
 धमाआमा लाग समयमा पैदल चले थ और अपना भमबाव उन  
 गादियों में लाद देत थे जिनमें इनके हथ्थ साथी बैठे होत थे इस  
 प्रकार पात्र २ सवारियों के साथ हम २ सवारियों का भमबाव  
 लड़ जात स घेने भ चला नहीं जाना था और गादा घाना चित्त ता  
 था लकिन उसको यह हा मारहा दिया जाना था कि यह कुल  
 भमबाव उन हा सवारियों का है जो सरा गादी ॥ बैठे हैं यात्रा  
 को पाये हैं गाना दाना और भाडे बतन साथ लाये हैं, हम वास्ते  
 यह सब भमबाव ता हम ही के साथ पागला और सा पीकर



था इस वास्ते उम्मा राउ ही नाम हुआ था और यह सेठनी ही कहानन लग गया था ।

मजान पर भाबर भी जमनादाम ने यात्रा की खुशी में दिल खोलकर ड्योनात बना था जिसमें हिन्दू मात्र का बटिया भाजन विनया था और सब घन लगाया था इस तरह उम वालर क कारण यहुनों की यात्रा होगी और जमनादाम क सात हजार रुपये धम में लग गये, इस यात्रा के यात्र में यात्रा लोग लुप ही भविष्य में तुल रहते थे और जगमग स लाचार होकर गुस्से में भर रहते थे जगमग भी सब हा बिस्मय का करने थे और मायाचारा भी सब हा प्रसार का बनात थे, यह भाषन में भी लड़ते थे और भाव लोगों स भा मचने थे जिसका यजद में हर एक एक न एक तरह का तमाशा हा बना रक्ता था और यात्रा का समय भगडे दूतों में हा करता था बमा / तो साथ पर जाकर भा दूता होजाता था पर बहुत दूर नी रहन पाना था और जन्दा ही निमर जाता था जमनादाम के बहुत सयहा नाथों का बदनामन तात पार करा और बहुत हा भद्रा के साथ करी इस वास्ते उनके तो मानो नम जन्म के पाप छे दोगये और पुण्य के मन्दिर भर गये हा नाथों का तो मिट्टा के स्पर्श से हा मनुष्य का कल्याण होता है उमा भद्रान हान से जमनादाम और अन्य भी कई घमस्त्रिमा लोग यहा स बहुत भा मिट्टी खोदकर गये थे जिसमें से बह बुड मिट्टा नित्य मन्दिरी में रक्ता गये थे और मन्दिर में आने वाले त्वा पुण्य बह रन लगन भाथे का लगाकर अपना काम सफल, होता समझ मन थे ।



जरा भर भी दया नहीं आता था, यही जमनादास के यताव से तो ऐसा ही माग्य होता था मानों इन लड़कियों की दुःख देना ही उसने धर्म समझ रखा था यह जारों लड़कियां उनको काटा सी साजना थीं इस याम्ने वह सदा जका मग्ना ही मनाता रहता था और इस बात की निज्जि के याम्ने धीमपमान से भा प्राधना करना रहता था आधिर कुछ दिनों पीछे उनका मनोरथ पूरा हुआ और उनकी लड़कियों का मरता गुरु हुआ चार मास के बीच में पहिली लान लड़कियां मर गईं और छुटियों में घर भर गर, जेकिन इस बात में और भी चोरे आनाद पैदा न हुए इस याम्ने बहुत हा ज्वाला घबराहट पैदा हुए अनक देया देयिया मनाह गई और भल में साकुम्बरों दया भा च्याई गई, तब एक और भी पुत्र पैदा हुआ साकुम्बरोंदाम निमका नाम हुआ इसका तीन बरस पीछे खलही देया के प्रमाद स एक और पुत्र हुआ जो खलहाप्रमाद का नाम स विष्णुना हुआ इस प्रकार एक लड़का और तीन लड़के जमनादास के मौजूद रह पग्लु ब्याह होनेके पीछे साकुम्बरोंदाम का भा देहान्त होगया जिसका विषयात्मा मौजूद है और अपने जेद देयों के ही साथ रहता है इस हा विषया ने जमनादास का कुमेन होगया था जिसका रज्जु म जमनादास की बदमा था । अपना जान खोदी था और जमनादास का दोषारा ब्याह कराने का मौका दे गई थी ।

अपने तानों माईयां क बाघ में बेचारी एक लड़की छिमा की जो दुःखा होती रही है और जिन जिन महाकथों को सहकर भा यह जिन्या रही है उनको यह लड़की ही जानती है, हमारे बन्धु में तो यह ताकत नहीं है कि हम उन सब सुनीयनों का बधान कर सकें और उनके बन्धान स पाठकों का दिल दुखाने के सिवाय और कुछ फायदा भी न भोती है मन्थेन में इतना ही



तम बर दिया और मुख मभागता की टांगी जथाव द दिया  
 इसका परा जोम्भीर क्या दुपुन कहें क्याकि यह मरा बाप  
 इन वास्ते में तो भयने ध पे का बहुत ही पु उ धामता है और  
 जो लयाम लगाना है पर भयन भद्र व हृदय की क्या कर  
 जेसम न भाव विजाता है और मर वजने का कब हाता है  
 भगवान् ' क्या मर घर में यह हो इलाफ है कि मर बाप जसा  
 मर घर का हृदय रखनेवाले निदर अनुप मा धमा मा कहलाय और  
 मर परम भगत समझे जायें भगर मर भगतों का यह हो निशाना  
 है और ऐनों ही न मू राजा है ता मरा ता मुह दूर ही हा दइयन  
 है पर शास्त्रों में ता में यह ही सुनरी आरदा है और सपन हृदय  
 को भी यह समझा रहा है कि बाप पुण्य मा भयन परिणामों का  
 दा अनुसार लगता है और अच्छा बुरा नियम का मुनासिब हा  
 मिला है इन वास्ते भगवान् तो एत आदमा न दगि न मा  
 ताजी नहीं होता है जो उसका पूजा पाठ मा बहुत पु उ करता है  
 मर हृदय को भयन कहार हो बनाये रखता है जो मान माया हा  
 बाप के पन में होकर सब तरह की बरमाना मर दमाबाप हा  
 करता रहता है और भयने स्वाय में अथा होकर बिना दुरा का  
 मर्ष सुबसान की दि पुन मा नहीं मरता है इन वास्ते हम ता  
 देया हा मान्य होता है कि मर बाप का पूजा पाठ मा पु उ और  
 काम नहीं भगा है बल्कि इसकी जाय तो एकरम हा दुष जाना है  
 का कि यह मा मूठपूठ का हा धमाता बनता है और बाहर की  
 पुन दिव से बरक हा मोनों को दयाता है अमर में धम का ले  
 एक रमा मर मा जस उसमें नहीं है बल्कि उसका अहर तो दनों  
 की हा म हो पाठ मरा है मरा दमा और और मर कर उष  
 उमने धमा देहा का हा बनेवा निबन्ध दिया है और दमादे  
 माओं को नर दिया लय पर मा बहुत ही दनिया निदर है देया  
 हा है इसका भवें मोर को हा म मर और बंदमूर का हाय





## अध्याय १६

अब देसरा मुनापत की माग राजरानी का हाल मुनिप कि मरफाग जानूस ने पूरी पूरी छानखा करके हम बात की रिपोर्ट बाद कि राजरानी पर हम गिराने का मुकदमा बिन्दुल ही मठा लगाया गया है उसको १ वमा गम रहा है और ॥ उसी गम गि गया है फिर एक हमरे हा गाय में अचानक एक हमारा का गम गिर गया था बिमने उसको कुछ पर फेंक दिया था, जमना दाम के कहा न पुनि का सिपाही उस गम का उठा लाया और उसका इ काम इस बेगार के गिर लगाया इन ही तरह राजरानी के यहा थोड़ा मा जमनादाम ने हा कराई थी और शेरसिंह का धनमाही में जालान होजाने का बाल भी उस ही ने चगाई था, फरवटर साहब ने जानूस का इन रिपोर्ट पर गम गिराने का मामला तो राजरिज पर दिया और राजरानी और शेरसिंह की पूरी पूरा तसल्ली करदा कि अब उन पर कोई भी आदमा किसी तरह की ज्यादा न कर सकेगा। इन घाले यह तो मय बड़े इत्मातान स गान म रहने लगे हैं और भींदू हमार का सहायता से होता करके मय कुछ पैदा करने हैं और सुन चीन से रहत हैं, मगर मय फरवटर साहब ने कतान साहब को यह हुकम दिया है कि वर जमनादास की इन सब कतनों का सचन इच्छा करके पीछरारी में उसका जालान करावें और उसको माकूल सजा दिलावें, इन घाले मय पुनि ४ लोग कतान साहब के हुक्म स इन मुफ्तों के बापने में ही लगे हुए हैं और जमनादास और उमक साधिया का जालान करने हा चाले हैं, जमनादाम का ना इन सब बातों की पूरी पूरी खबर मित सुना है इन घाले घद मा आजकल रात दिन इन हा के तोन्पोड में लगा हुआ है और रुपये की पाग का तरह मडा रहा है और ठहरों का तरह



भी माण्ड कुच करा देंगे और हमारे माण्ड को भाइन ही का  
 माण्ड बना देंगे, इस धाम्ने इन बेगारों का मित्राय  
 इतक और कुछ न समझा कि उन्होंने बीछों को तो उनक  
 धार के पहा मेंना और मुद्द भात्रीविवा का तगाश में पादेश को  
 भिन्न गये लेकिन जहाँ वहाँ भी यह लोग जाते थे अनजान होने  
 के कारण कौन साहूकार नहीं पाते थे और ठाग भोग  
 के कारण इनके पास नही आता था इन धाम्ने इनको यह जगह  
 का ज्ञान हो लीगला पड़ जाता था बापिर उप दा नह हाकर यह  
 लोग भगा चला मयुरादास के पास गये जो इस समय मुरादनगर  
 में रहता था और जयपती मठ बना बैठा था उन्ही इनको अपने  
 मकान पर दियावा औरत देकर समझाया और अपने पास से  
 कुछ दानवा देकर इनका रोजगार धरगया ठाग मयुरादास के  
 मकान होने के कारण शहर के लोगों ने भाइनका बहुत कुछ धन  
 धार लिया और हरिश्चन्द्र का माण्ड उधार र पा इस धाम्ने इनका  
 भण्डा तरफ बास धाम्ने लगा, तब ही हीर अपनी शिखी का भी  
 पहा कुन लिया और मयुरादास से भण्डा रहना शुरू कर दिया ।



1

हैं हम घास्ने कई शहरों में घूमने फिरने पर भा मथुरादास की  
 पत्नी नौकरी न मिली इस घास्ने मथुरा तो उमन टाकरी दोनो  
 शुरू करी और मकानों की चिन्ता पर नहर का खुदाई पर या  
 बिना नष्ट की खुदाई पर मिहनत मन्दूरा करनी, फिर कुछ  
 दिनों पीछे लोगों से कुछ जानकारी हासिल पर एक हलवाई की  
 दुकान पर कमेरा रह गया, हलवाईयों के नौकर बहुत हा ज्यादा  
 खटोरे होजाते हैं हर एक मिर्गई घुरा घुरा कर खाते हैं, लेकिन  
 यह बेचारा एक भा कप मही उताना था और बिना दिये कुछ  
 नहीं खाता था, हलवाई ने उसकी इस बात में खुश होकर उसको  
 बहुत ही प्यार से रक्षना और बड़ा पौशिश स ठमका हलवाई  
 का सब काम सिखाया और फिर अपना जगह बचन पिठाया,  
 इस बात में २०-३० रुपया उसका तनखाह से बढ़कर उसके  
 पास उमा भा दोगया इस घास्ने अब उसने थपन मालिक का  
 सलाह लेकर बहुत ही बढ़िया २ मिठाइयों और नमकान चीनों का  
 छाना बनाया उसमें गुड दूध पाउ ताजा भाटा और मच्छा  
 ताजा घा लगाया उसका यह ख्याला सब हा की पसंद आया  
 और उसको सब कुछ हाथ आया, सुबह स दोपहर तक ता यह  
 ख्याला बनाता था और दोपहर स शाम तक तमाम शहर में फिर  
 कर उसे बेच हाता था जो बच रहता था उसको अगले दिन  
 ताजे भा में नहीं मिलता था बल्कि याता माल के नाम से  
 मलहदा ही रहता था और कुछ सस्ता ही देता था, इसके अलावा  
 यह जानकर बेजान और मद् बूढ़े बच्चे सब की एक हा भाव देता  
 था और हाथ ठोक हा देता था टिमकी बगल से शहर में उसके  
 ख्याले का बहुत ही ज्यादा फैलाव हाया और दूसरे ख्याले  
 वालों स कई गुना ज्यादा बिजने लगा, इसमें हमने बहुत हा  
 ज्यादा गुनाफा हुआ और एक हा घरम में खास कर दार भी  
 लगा सब रहा अब उसका उस हा हलवाई का सलाह स ख्याला









## धर्मोपदेश ।

संसार के मय ही जीव सुख पाने का तो इच्छा करने हैं और दुःख न पचना चाहते हैं, संसार के जाघों का मारा भाग हीट धार मय ही प्रकार के उद्यम और उपाय हम ही वास्ते हाते हैं कि सुख की तो प्राप्ति हो और दुःख दूर होनाय परन्तु सुख का प्राप्ति का उपाय रामोंने यह ही समझा रक्खा है कि जिस चीज का लम्बो इच्छा हो उसकी तो पूर्ण हीनाय और जिसका हम नापसन्द करने हैं वह दृष्ट जाय संसार में अनन्तानन्त वस्तु भरा पड़ा है और यह भी सदा एक ही नही रहना है बल्कि अनन्तानन्त प्रकार के रूप बदलती रहता है इस ही प्रकार हमारा इच्छा ये भी सदा एक समान नहीं रहता है बल्कि यह भी क्षण २ में बदलता ही रहा करती है ता भी हम यह ही चाहते रहने हैं कि संसार का सय चाहें हमारा इच्छाओं के अनुसार ही बनता बदलती रहे और हमारी गज्जी के मुताबिक ही चलना रहे, लेकिन ऐसा होना बिदुल ही असम्भव है इस ही कारण भगना इच्छा के अनुसार न होने पर अपने हृदयमें दुःख मानते हैं और इच्छाके अनुसार हाजान को सुख गदानते हैं, यह ही हमारा भूल है, अगर हम वस्तु स्वभावका जानन ता यह बात भली भाँति परिचानत कि संसारका सारा कारणना हमारे आधीन नहीं हो सकता है बल्कि भगने ही स्वभावके अनुसार चलता है इस ही वास्ते संसार की कोई भी चाह हमारा इच्छा के आधार नहीं प्रयत्न मक्नो है बल्कि भगने ही बायद के अनुसार प्रयत्नो विगड्गो है, और सबसे मोटा बात हममें त्रिवार करने की यह है कि संसार का सारा कारणना मनुष्यों के ही आधीन कैसे होनाय और कैसे उनही की इच्छा के मुताबिक चलने लगे क्योंकि मनुष्य तो संसार में लाखों करोड़ों और अर्बों खर्बों हैं इस कारण यह चेष्टा संसार जिस मनुष्य के आधीन चले और



क्याद ही उत्तर धरना और बन्द होन का कर्नात्मक करण सुख और दुःख मानने का ज्ञान है और कृपा कृपे उदात्त है ।

संसार व इन जीवों में मान माया लोभ मोह आदि का प्रसार की भयव उत्पत्ति रहा करता है जो कर्माय बढाती है इन ही कर्मायों के कारण तत्काल दुःख का दुःखयें उत्पन्न होता है और हा हा कर्मायों के घरा में ही रह बढ जाय पना अर्थात् हा जाता है कि वस्तु स्वभाव का ता मन्त्र जाना है और बिन्दु है आत्मभय और उन्ही पुराने दुःखयें करने का जाना है और उनका पूरा न होने पर दुःख पाता है जैसा कि मनुष्य स्वभाव व विषय जान और सामान्य विद्या हावान व काम करना दुःख भा विदुष्य तत्काल रहता है हा हा स्वभाव करता है व्याह साक्षात् में लुप्त दिग्गतात् कर फलस्वर्गी करके और अपना सब जगत् पूर्ण का भगवान् जियों व वैश्वर घटका में लगा कर और बहुत कुछ ब्रह्म धरा निर धराकर भा धरागत हा ब्रह्म रहना चाहता है और ऐसा दगा में ता मन्त्र जैसा भगवान् व्यापार करता रहता और सब समाप्त होता रहता व भागा बाधे स्वभाव है अर्थात् स्वभाव की बहुत जगत् हात्क स्वार में विषयकर और उमका रहा विद्या पर कुछ भी व्याप्त न रहता है यह कर्नात्मक स्वभाव है कि वह सब तरह स्वर ही उठे और संसार में ब्रह्म हा लुप्त, संसार के लोगों का भाग सुनाई बाधकर उनका पुनर्जात दुःख का और उनके कुछ भा ब्रह्म न भाकर गा या हा जानता है कि दुःख का सब लोग ही ब्रह्म की पुनर्जात न वरें ब्रह्म का स्वभाव केरे काय भायें, हा हा तत्काल में ब्रह्मका करता हुआ दुःख का भाग रहता हुआ और वरों की हा हा मन्त्रा दगा भा हा हा चाहता है कि मेरे पारों का उदय न बाध और दिवा पुनर्जात बिदे ही मुझे पुनर्जात का पार निर जगत् मन्त्र मेरे सब ही बाध निर हात्क में और मेरे सब हा हात्क पूरा है भायें ।



पद्म के लिये लगाना है और पद्म मिलन पर पक्षीस को जी चाहता है और २ मिले तो पक्षीस की तरफ मन दौड़ाता है और पक्षीस मिले तो घट सौ की इच्छा बाधने लग जाता है गरम इच्छा का पक्षी होन पर भागे २ हो पड़ा चला जाता है और यों सना मध्य २ कर खुश हो उठता रहा करता है ।

इसके सिद्ध यह भी देनेने में आता है कि जो मनुष्य अपनी इच्छाओं को दबाना है और सन्तोष से ही रहना चाहता है वह समार की बहुत थोड़ा सीधें मिलने पर भी सुनसाना हो पाता है और दरएक अवस्था में मानस मग्न ही मगाना है, जिससे यह पान साफ सिद्ध होता है कि सुख की प्राप्ति इच्छाओं का पूरति में नहीं है बल्कि इच्छाओं का एक प्रकार का रोग है जिसके दूर होने या कम होजाने में ही सुख शांति का भोग है, जिस प्रकार कि खुशला की बीमारी में छात्र के खुशाने से खुशली दूर नहीं होती है बल्कि दया लगाकर खुशला के परमाणुओं का नाश करने से ही वह खुशली जाती है वा जिस प्रकार की बलगम ( पफ ) का बामारा में मिठाई खाने की इच्छा होने पर मिठाई खाने से मृति नहीं होजानी है बल्कि ज्यादा २ ही बढ़ती चली जाती है और भीषधि द्वारा बलगम के दूर होने से ही मिठाई खान की चाह दूर हो पाता है इस ही तरह इच्छा का पूरति करने से तो उस इच्छा की शांति बढ़ाविन् या नहा की जा सकता है, बल्कि इस तरह तो वह ज्यादा २ ही बढ़ती चली जाती है और ज्यादा २ ही दुःखदा होती जाती है, किन्तु ज्ञान वैराग्य और शील सन्तोष क्या भीषधी के द्वारा ही चिननी २ यह इच्छा दूर का जाती है उनका २ ही सुख शांति प्राप्त होती जाती है ।

अनुभव में यह भा स्पष्ट ज्ञान होता है कि जिस प्रकार कि संग शराय और अफीम आदिक नशे की धानों की बारबार खाने से उनका भादन पन आता है और फिर अकस्मत् बेहोश या राधन का



ज्ञान गुण की दवाकर भगना कथाय के अनुसार ही मानने  
 पाते हैं और ऐसे २ उल्टेपुल्टे बाध्य करने लग जाते हैं कि  
 हम विन्दुल ही तवाह और यत्वाह हो जानें हैं लेकिन फिर  
 जान नहीं पाते हैं बल्कि और भी ज्यादा २ कथाय करना लग  
 है और हम ही में भगना अनुसार दिखाने हैं हम चाहते यह ही  
 न भय है और यह हो हमारा शुभकर्म है कि मान माया लोभ  
 भादिक कथायों का उद्गार जो हमारे हृदयमें उठता है मर्गान्  
 को बड़ा समझने घमण्ड करने और भगने भाये में त्रिहुदकर  
 की सीमा दिखाने और भाए ऊँचा बनने वाली मान करने  
 ने मारा हमको प्यता है और छल बना दगा झूठ, मकर  
 के द्वारा भगना काम निकालने और यत्वाह दिखाने वाली  
 पारो करन या जा शीघ्र हमको पैदा होता है और गंगार क  
 यों की इच्छा लोभ लालच, लुद्धमर्ग और स्वार्थ कर्मान् लोभ  
 य या जा पम्दा हमारे गले में पड़ता है और कृमरों को मारा  
 ने और पुष्पमान पनुवाने मर्गान् कीध कथाय का जा भक्ति  
 के मन्दर भगवती है इत्यादिक इन सब हा कथायों की मैना को  
 करना हम शुद्ध कर देखें और बराबर बज बजते हा यह जानें  
 न कि यह विन्दुल ही मारा को मान न हो जाये ।

परन्तु जिस प्रकार कोई २ सोमार जो पैत शमा दान है जो  
 को से बहरी न्या भा जा मने है कठिन स कठिन परहर को  
 निमान है और पैत के बहरी के अनुसार कई २ दिन का महुन  
 कर जत है उनका पैमा हा कडा हवाज बिद्या जाना है और  
 म ना उनको बहुत ही अद् दाजना है लेकिन जा बामार  
 के बहुत कमजोर होते है हम बारण भगवती भादनों में जायन  
 दवा भी मजेदार हा करने है लदेव्र भा कुछ मरा निबादने  
 भागों मर्गों मर्गों मर ध्यान स ना घरता जानें है लडा  
 न मर हा बिद्या जाना है उनके पम्ने दवायों का मात्र न





करके कुछ तो उन कथाओं के अनुसार चलने हैं और कुछ उनकी  
 अपना विचारशक्ति के अनुसार चलते हैं यह गृहस्था की उत्तम  
 अध्यात्मा है जिससे हम समय में सुख शान्ति में ही बीतती है और  
 भोगात्मा के वास्ते भी हलकी कथाय करने की हो आदत पड़ती है,  
 ऐसे ही परिणाम सुखदायक या शुभ परिणाम माने जाते हैं और इनसे  
 पैदा हुए भावों का पुण्यकर्म कहलाना है तीसरी अध्यात्मा यह है  
 जिसमें हम इन कथाओं को मथया हा दवा देते हैं या जड़ मूल से  
 ही नाश कर डालते हैं और कुछ भी इन कथाओं के अनुसार नहीं  
 चलते हैं अर्थात् संसार समझा कुछ भी कार्य नहीं करते हैं बल्कि  
 अपना आत्मा के ध्यान में ही मग हो जाते हैं ऐसे परिणामों से  
 हम समय में परम आनन्द होता है और भागे के वास्ते भी किसी  
 प्रकारका कथाय करनेका आदत न पड़कर अर्थात् किसी भी प्रकार  
 के कर्मों का बाध न होकर परम आनन्द ही आनन्द रहता है ऐसे  
 ही परिणाम महाकल्याणकारी या शुद्ध परिणाम माने जाते हैं और  
 इनसे ही मोक्ष की प्राप्ति बनात है, इस प्रकार हमारे परिणाम तीन  
 प्रकार के होते हैं एक अशुभ या पापमय परिणाम जो कथाय का  
 वज्रा स होते हैं, दूसरे शुभ या पुण्यमय परिणाम जो कथाय के  
 हल्का होन से होने हैं और तामर शुद्ध या कल्याणकारी परिणाम  
 जो कथाय के विरुद्ध न होने से ही होने हैं, इनमें ॥ शुद्ध परिणाम  
 तो गृहस्थात्मा साधुओं को ही मकन है जिनको यह ही अध्यात्मा तरह  
 समझ सकते हैं और यह ही भला मानि उनका ध्यानभी कर सकते  
 हैं इस वास्ते शुद्ध परिणामों के कथन को छोड़कर हम शुभ और  
 अशुभ परिणामों का हा कथन करते हैं जो गृहस्थियों को सदा ही  
 भान रहने हैं ।

गृहस्थात्मा साधुओं का ध्यान तो हम कुछ नहीं कह सकते हैं  
 पण गृहस्था मनुष्यों का मन तो ऐसा चञ्चल है कि वह किसी  
 समय में विधाय नहीं देता है बल्कि क्षण २ में तरह २ का कथाय



और यह समझे कि जिसपर हम समय भा हमारे हृदय में बेचैनी पैदा होकर लगे आबुलगा और दुख पैदा हो जाता है और मागे य धारण भा हमका पाप कर्मों का हा बंध पड़ता है जेवना मगर हम न मा खुशामें आदा खुशी बनत है और न रश्च में आदा रश्च हा मनाते है अथवा खुश और रश्च में बेचुध नहीं होजात है तो मागा हम मयता कण्ठ का मटक को दबाकर रगका हलको ही बनाने कि नियम हम समय भा हमारे हृदय में हाकिम रहकर हमको मुक्त घेन हा ध्या हाता है और भागामी के धामन भा हमको मुक्त कर्मों का हा बंध पड़ता है इस बाले यह हा हमारा धम है और यह हा हमारा धम है कि हम खुशामें आदा खुश न मनाये और रश्च में आदा रश्च न बनत लगे जाये कि उदा नक होयक मयता हम रश्च और खुश का कर्मता हा कर्मता बनत जाये जिसपर हो न २ किता हमारा हम विदु हा मममायो बन जाये भी ३ परम भाग्य में मम मम नग जाये ।

हम मृत्काल लोग मगर दुनियाका उन हा काजी की अभिगता करे जिसका प्राणि के धामन हम कोमिल कर मकते ही ता हमारे दुखमय कायमें ता किता ११ प्रचारको कमा मरों धानी है विदु हमारा लक्ष्यमयार का अभिगतावे मकर धम जाती है जिसम विदु और बेचलकका आबुलगा हमक विदुमया मरी ममने धानी है अकिम हम ता केमकिता का मरर लक्ष्य विदु का धम हा और धममिनी का मरर ममम है उदा विदु का धम हा हमारा भा विदुम हा लेता हम है और धानी हमारा ही धम जिसम है कि लक्ष्य को ता मरी कोमिल का और मम लेने ममने का धम हा बनता है कि हम हमारी की मुक्त लक्ष्य है मकर सेह हा सेह मम को ममने है और बेचलक हा धमने हमको ममने है और धमम होकर विदुम हा मुक्त ममने है मममम ममम हा का मर से धमने को हा धमने है का हा मर से धमने का







पुण्यों से काम भोग का इच्छा रखती थी, लेकिन इस  
 राति ने प्रत्येक स्त्री की इच्छा को एक ही काम पुण्य  
 प्रत्येक पुण्य की इच्छा को एक ही काम स्त्री पर ठहरा दी  
 यथा इच्छाओं को अन्य किसी स्त्री पुण्य की तरफ चलाने  
 बिना ही रोक दिया है, इस पामने इस विवाद का  
 मनुष्यों की यह काम भाग का इच्छा बहुत ही छातीमा  
 दर रह गई है और इस प्रकार बहुत ही ज्यादा पट गई है,  
 यथा काम का पुण्य इस हद को उत्पन्न करता है और  
 इस की भयना व्याही हुए जाडा से बाहर से जाता है तो  
 यही यह काम बनाय बहुत ही ज्यादा भग है इस पामने  
 इस यह भयम हो करता है और पाप ही बमाला है और  
 पुण्य भयना व्याही हुए जाडा में ही भयतोष करता है  
 इस इच्छा को उत्तम बाहर लगे जाने देना है तो देना उ  
 काम भोग का बनाय बहुत हदकी है इस कारण देना  
 यह भय हो करता है और पुण्य हो बमाला है ।  
 इस भय का इतना बात है कि भय भयम का पुण्य पाप  
 बनायो क हवा काया होके पर ही निभर है, इस पामने  
 इस भयने ही विवाहित पुण्य में का के है पुण्य भयनो  
 इस स्त्री में भी अधिक भयना होता है और इस भयने  
 आये क भयने ही अधिक मोहित होता है और इस प्रकार  
 यो हद क भयने ही भयने का भयना का भयने देना है तो  
 भयने भयम हो करता है और भयने हो करता है ।  
 इस में भयना करी का हद देना बहुत है कि देना  
 किसी भी हद का भयने है इस भयना करी का  
 भयने का भयना के भयना में बहुत ही भयना भयने  
 और इस में बहुत भयना भयने है और इस भयने  
 भयने क हद भयने का भयने भयने भयने





दिया प्रकार में पूरे २ मद्रद देना चाहाओं उपादनों  
 कि कदाचित् को परा २ मद्रद देना करना उनकी रक्षा सिखाये  
 कि मद्रद २ य १ देना १०० का पत्र देना देना रसी नीकर  
 मद्रद नीर अन्य मा खय हा आशियाकी योग्य पाठना करना और  
 किमा प्रकार की भी नकलप न हाने देता हम ही प्रकार  
 र नीर भी बहुतनी विम्वारिय, है निनके पूरा करना के घाम्ने  
 देना था हा हुआ है इन विम्वारियों को पूरा करनेमें यद किसी  
 मद्रमान नहीं करता है और १ किसी प्रकार का पराया उपकार  
 १ कता है यन्त्रि घाम्नाय ॥ यद मो अपना ही क्षण घुषाता है  
 य १ मनुष्य व रान मद्रन का दावा हा पला था हुआ है ओ  
 नगर का मद्रपता और इन सब विम्वारियों का पूरा करने ॥  
 ॥ गन्ता है अगर हमसे रहित मनुष्यों ने इन सब विम्वारियों  
 ॥ पा न दिया जाता तो मनुष्य के रहन सहन का दावा ही वि  
 का जाता और मद्र उपद्रव और अशान्ति केकर मनुष्य जानि ही  
 ॥ को प्राप्त होनाओ और यदि नाश का १ मा प्राप्ति होती तो  
 मद्र उपद्रव और हनी मद्र मद्रस्थानों तो कदाचिन् भी न रहनी  
 देना मद्रस्था म कि यद हमसे मित्र है और मद्रम मो हम पैना  
 ॥ १ हो मद्रत और पैना भा होते तो मद्रने सुनकर यद सामिप्रियों  
 १ गने विम्वर कि मुनिय मद्र पडा है और जो मद्रों कनेहो मद्रों  
 ॥ गतामर कोनाश न हा घमता और बहुतनी मद्र मद्रहा है हम  
 मद्रने हा सब शतों व अपने पुष्यों व क्षणों है और हम मद्रका  
 पुकात के घाम्ना ॥ हमका पात्रिय है कि हम हम मद्रका अद्र  
 रतोंके मद्रमान मनुष्यनाथका सुख शान्ति रक्षा सिखा और उपनि  
 व घाम्ने पात्रिय करें और परा २ मद्रपता मद्रुनाये ।

इनके १ १ य हमारी कपाय तप हा हमका रह मद्रना है अत्र  
 कि हम अपने मद्र कोई मद्रना व मद्र हा मनुष्यों व मद्र है किता  
 मद्र मद्रका पलाता और हमका पला देय और मद्रमद्र १०







## अध्याय २३

पुण्डरीक का धर्मोद्देश्य तो यथार्थ होगा परन्तु हमारे  
 पत्रका का मत तो सुन्दर जमनादास का ही हल जानने का धाम्ने  
 मन्त्र हो रहा होगा निम्न पर पुनः तो फीनिदास के मुखमें से  
 हाथी, जानका का शिरो कर रही है डिग्राद्वार गगन उसके मांस में  
 व्यावर्ही जालान परा करार गगना रुपा धमक करनकी फिर  
 मं गग रह है, बड़े परदशरथ निम्न गये है और उसकी जगान ज न  
 अलग गुल विना रहा है मंको फजादो निम्न रही है, तरद  
 तरद ही उसका जा जग रहा है मांस में दम ला रहा है और गनों  
 हाथी स घर का लुग गग है सध का धानों का तरफ जमनादास  
 का ध्या है गग का इतनाम ह गगिन हम वल तो उसकी  
 उपाय का शिरो फा गगना ए मुखमें से हा वयने का हा हा रहा  
 है यह घर २ ग व में जाता है गगों को कुम्भगता है टगता है  
 गगन धान निम्नता है और अनर प्रसार का जा गगना है जिसस  
 का भा भादमा गगन निम्न गगनाही देने को और अदालत में  
 राहा होकर अगग - मायग गगन ने का तप्यार न हो, क्योंकि  
 पुनः के नाममें से तो गगनका जा कुछ मा मादूम बिपा था  
 नह सध मेव गगन कर गगन का गगों स मिलकर और उनकी  
 पुन दान गुनर हा गगन गगन भा गगिन धध ता गुन धातों  
 ग दाम गगों चलता है धाक गगन गगना में गगना देना पटना  
 है सध हा मुखमा गगता है, हम धाम्ने पुनः स गगन पाटों पर  
 बडा जार करदा है और उनकी गगना दन क धाम्ने मजदूर कर  
 रहा है।

इधर जमनादास का मांस धातों पर यह गगन चल रहा है  
 कि अगर गुमन स २ व ने होला य र राजराजा के यहा धात  
 होन शीर्ष पर ग व म धातिया गगन का भूटा हलजाम लगाने



पार जो भाया और जग जीतार करने के धामने बहुत मोर मगाया,  
 और इस धान पर बहुत जार मगाया कि कम से कम यह धान तो  
 जिन पर हा लेना चाहिये कि मानाया दो हजार रुपये का  
 मन्दाप तो जेन मन्दिना में देगा है और दो हजार रुप का  
 मन्दाप ॥ एक मन्दाप सोधने पर धान के धामने का गई है  
 मन्दापान न सिना के मरन पर भी पाय की रुपये का मन्दाप  
 धान नगर के मन्दिने में लगाया था जिन उम वन उमको यह  
 मान्य मदी हामबा था कि सिनाको कुछ नकरी भी छोड़ गए हैं  
 इस धामने यह रुपया उमन भयन पाय से लगाया था, लेकिन  
 अब तो यह धान बिबुन हा प्रभिक था कि मानाया पाय हजार  
 रुपया छोड़ गए हैं इस कारण अब का धान तो जमनादान ने  
 बहुत हा पर फैलाया और इस धान रुपये का उनका मरन में हा  
 धान का हा के धामने जार लगाया बाकि कुछ भयने धाम से भी  
 लगा ॥ एक धान जोगार करन का चाहता लगाया लेकिन  
 मपुरादान ने उमका एक भाग सुनी और पाय - कह दिया कि  
 माना सिना को जब मैं भापके धाम से धरा लाया था उम धक  
 उनके धाम एक फाँदा भा नहा था, १५१ यह मैंने उनका दो सी  
 रुपये महाना इस हा गरज के धामने उना गुरु किया था कि यह  
 भयना मन्दी के गुनाबिक निस चाहें दान करने रहें, लेकिन  
 उन्होंने इस पाय रुपया महाना ही रख किया और बाको रख  
 रुपया बचता हा रहा यह ही यह रुपया है जो उनके पास से निकला  
 है, मरने समय भा वह कुछ रुपय करन के धामने नहीं वह गये हैं,  
 इस प्रकार यह सब बचा हुआ रुपया मेरा हा है नियाम मेरे इसमें  
 और सिना का भा कुछ अधिकार रहा है, और मैं अपना रुपया इस  
 प्रकार रख करना जिन भा मन्दाप नहीं करता है निम प्रकार  
 भाप बताते हैं ॥ तो एक कीहा भा हा जमनों में नहीं सपाईगा,  
 हा जायने इच्छित है जो चाहें भयन पास से लगावें और निम





## अध्याय २७

हार्द करत का होकर मधुरादान का पुत्र भी बन गया। लोगों  
 ने तब समझा कि पुत्र ही क्या दा गोक निपाया लेकिन मधुरादान  
 ने तब ही यह दा समझाया कि जिस पत्नी का प्राना का अधिक  
 पुत्र होता है उस दा के विरुद्ध जान का रक्त भी अधिक दा हुआ  
 जाता है। इस ही कारण मैंने इस पुत्र का उन्मूलन के समान बना  
 दा कि अधिक पुत्रों नहीं मरना चाहिये बल्कि एक ही दा दा  
 का एक लक्षण भी दा जान समझना चाहिये इस दा प्रकार  
 पर मैं उसका मृत्यु हो जाने पर भी कहता हूँ कि अधिक दाक भी  
 दाक चाहिये क्योंकि अधिक दा और अधिक गोक पानेवाला दा  
 दा दाक दाक है और दाक का मज होता दा पाद है। इस  
 दाक अधिक दा या अधिक गोक दाक में भी निपाय पाद के  
 और पुत्र मा दाक नहीं माना है मृत्युदा का दा दा ही धर्म है कि  
 दा पुत्र का दाक में भी अधिक पुत्रों न मरने के रक्त का दाक  
 है अधिक दाक न जाने कब जाये बल्कि दोनों दा अवस्थाओं में  
 दाक, दाक को मज रखकर पुत्रों मा दाक ह मरणा के और  
 दा मा दाक दा विदा करे।

[illegible]



होते हैं धनद नहा करेगा तो आगे की वंश किस तरह चलेगा  
 'उनगर के घास्ने ना सत्तर सत्तर धरम के कुन्ने भा ब्या  
 राने है और परे परे जिया के दाने भी नयान रया ब्या गाने  
 है फिर नमो भभा बधा ही है इन घास्ने मुझे ना उरन हा ब्या  
 बाना एतेहा और मेरा पद पदना बधाय ही मानना पड़ेगा

मनुमान उनका इन बातों में विदुष मा नहीं आया और  
 उर नर लगी ने उतरने 'बाडा ही हुआ तो उरन साफ न हा  
 रन पुताया नि जिगाह बनना और जोड़ी बनाकर नना ही-वेरक  
 में मा घुस्ने का मुदर धम मतना है जिसम उरक परिणाम  
 भा दाक रन सजने है और बनना का उतरनि भा हो गयना है  
 पानु रनान पैदा उरने और बंधने उरने को में इनका उरना  
 नहीं सम्मता है निजना कि साथ बना है इनको इनका अरु  
 मतना ता मेरा समक म निरा मूना और उरनना के निवाय  
 और पुठ ना मरी है इतिहास के देखन स साफ ना घाना है  
 नि किमी समय म इन दिग्गुप्ता ॥ बैरागा होना का  
 बहुत ही ज्यादा प्रसार होगया था और अधिराज - मधर छोड  
 उरन में जा बैराग सगे थे पदा तक नि माना रिता भा मान बको  
 को बैरागा बनाने के घास्ने साथु ननों रनने और गदी पर  
 कदा दिया करने के पुगल प्रथ ना यन तक पदा है कि नाना  
 महाराना भा मयदय हा बैरागा राजान थे और एक पद महा  
 राजा के बैरागा होत पर उरके साथ बास काम दयन राजा  
 बैरागा राजान थे नर उर राजाओं के साथ मय साधारण लोगों  
 के बैरागी होने का ना निजना ही क्या हा सबना है पया दगा  
 में प्रजा को रनना भा बहुत हा ज्यादा घरने लग गई था और  
 भास पास के देशों से दिग्गुप्तान पर नि साधन मा होने लग  
 गये थे, समार का पदा है कि अब प्रिया नदना पदना है नर  
 यने ही तेना म मयदय पैदा हो होइना करने है इन घास्ने



पक्षि पंदा होती है परन्तु अपना स्थिति का भ्रम जानने से जानि  
 व एक तिहाई पुरुष जो रंडवे होना है वह राहों से तो क्या है नहीं  
 ज्ञासक है इस कारण कुंवारी बन्ध्याओं को हा व्याहत है इस  
 कारण एक तिहाई रंडवियों का व्याह नाकर कुंवारे लड़कों  
 के नाम से तिहाई लड़कियां हा रह जाती हैं और एक तिहाई  
 लड़कियों के पास कुंवारे हा रह जाते हैं और यदि कुंवारे लड़के  
 हा तिहाई से कुछ अधिक व्याहे जाने हैं तो उतने हा रंडवे बिन  
 व्याहे रह जाते हैं मरज नितना स्थिरा राह पैठा है उतने हा पुरुषों  
 को भा बिना दान के कुंवारा या रंडवा ही रहना पड़ता है, इस  
 प्रकार उच्च जातियों का एक तिहाई जियें तो राह होकर दोबार ।  
 व्याह न होनेके कारण सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती हैं और एक  
 तिहाई पुरुष व्याह न पाने लड़कियां न मित्रों के कारण मरते  
 इस तक कुंवारे या रंडवे ही रह जाते हैं और सन्तान उत्पन्न नहीं  
 कर सकते हैं पक्ष जिनका यह निकलता है कि उच्च जातियों में  
 अन्य जातियों का अपेक्षा एक तिहाई प्रजा कम पैदा होता है और  
 इस हा पाले इन उच्च जातियों का विवेक बराबर घटता ही घटी  
 जाता है निम्नसे हा जातियों के शास्त्र हा शास्त्र होना या पूरा २  
 लक्ष्यवाया होता है इसके विपक्ष जिन जातियों में विषया विषय  
 होता है उनमें रंडवे या राहों का व्याह क्षेत्र हैं और सब कुंवारी  
 लड़कियां कुंवारी के हा पास बच रहना है अर्थात् सब ही कुंवारे  
 लड़कों का व्याह हा नाश है न अन्य यह कि उन जातियों में न तो  
 और रंडवा हा रहता है और न कोई कुंवारा हा बलिष्ठ लड़का व्याहे  
 जान सके हा सन्तान उत्पन्न करते रहते हैं और उनही गिनना  
 बटनों चली जाता है ।

ऐसी अवस्था उत्पन्न होने पर सब उच्च जातियों में मा  
 पैदा पैदा उठ गये हुए हैं जो यह कहते हैं कि उच्च जातियों में मा  
 रंडवा का व्याह तो राहों में हुआ है और सन्ने कुंवारा मर



को १२ १३ वर्ष का छोकरा को व्याह गऊ सोचने और सम्भलने का बात है कि जिस पुत्र की जयानी इस समय चलने का हो उसका पमा छोटीसी कन्या न विवाह करना जिसमें अथक जयानी भार मा न हो क्या महापाप नहीं है साफ बात है कि अगर मैं भय व्याह कराऊ तो जब मेरा मा को जयाना आयगी उस छत मेरी नशानी डल आयगा और अगर सारी जयाना न भा दूँ चुकेगा तो बेसी मापूर जयानो तो दमिज भी न रहेगा जैसी जयाना कि उस समय मेरा री को भार दूर हागी इस वास्तु मेरा और उसका पैर तो किसी तरह भी नहीं मिल सकना और उसको तो इस दुमेल से महान् दुख ही होगा जिसको यह जिन्ना प्रसार भी सहन न कर सकेगा और अपने मन में हरषक लडगा ही करगी, यह तो साशान् महान् जीव हिन्ना है और जीव हिन्ना में मा सपस बढ़िया अधान् मनुष्य जिन्ना है, पमा मन्ना हिता करने का ती मुकवा किन्ना तरह मा सादम नहीं होता है और पेसा कठोर ता मेरा चिन्ता किन्ना तरह मा नहीं चलता है मेरा मा ती येस व्याह कराने को साशान् ही महादासमपने का व्यवहार सम्ममना है और इसको महाभय्याय मानकर इससे मनुष्य के मनुष्यपने को बड़ा कम जाना हा निश्चय करता है ।

इसके अलावा यह भी साफ जाहिर है कि अगर हम दोनों री पुत्र मनुष्य का पूरा उमर पायें ता मैं मनुष्य ११ उन री से २० २५ वर्ष पहिले मर जाऊगा मथान् २० - २५ वर्ष तक गूढ रहकर जिन्ना रहने के वास्तु उमर का अधन पाए छोड़ जाऊंगा रदाय का दुख जैसा महाभयपूरा होता है उसको सब हा गान जानने है इस ही कारण जो री अधन पतिव पाए जिन्ना रानो है वह महाभयपूरा और पादिता जिन्ना जाना है मन्नु यह सब मनुष्य जानें ता सब हा होगा तब कि मैं ३५ वर्ष का उमर में वर्ष १२, १३ वर्ष का कनिका न व्याह कराऊ इस वास्तु इन सब मनुष्य जानो का मताना





जिस उम्र निशा लेने लगे और निशने मृग हा आन होगे वगैर  
मि रगता गया और धमलो परागा तो वह हा पुण्य वर मकता  
है हा मर जयाना में अथाय पदुत वाम वरम वा उम्र में हा रहुवा  
गिपा हा और तब व ही क्याह का क्या छोडकर उमने भाने  
वा रक्षा करनी मुक्त पददी हो ३ वर को उमर लीपाम क  
कारण ररपूर जयानो ता बहुत दिा हुए दू खुबा है और आ हुए  
पाहा बहुत रह गह है यह भी दू का होरता है इस याम्न देनक  
में वामा तो जांच गहों वर मकता है जैसा कि जोह भरपूर जयाना  
पाना करता, ता भी मुझे खयाम है कि क्याह म करान पर ॥ ना  
हुन कुछ हम वामो को जांच गकता और इस बात को कुछ २ ही  
हा गकता कि विधवा रिदों का कैरा बालना हागा और उमक  
रिदामों का वरा गति रहनी हाया ।

[illegible]

[illegible]









एक वन में भगी माति सब को निश्चय बना सकता है  
 और मरनेो सब बर्दिषा दिला सकता है कि दुकान में बनी किसी  
 वन का नहीं है, जिनका देरदारा है उसमें खोटा जेन्दगी है वह  
 है दुनिया तो यह ही आपदा है कि जेन्दगी तो सब गिर पर  
 पड़े हुए हैं और इन वाने दुकान लग गये हैं और शक्य भा  
 विमाना नहीं चाहत है,

मनुष्यदाम न यह सलाह देना बनाए था जिसमें सब हा का  
 पचता था और जिसका का कुछ मा मुकमान नहीं जाना था मगर  
 दुनिया का स्वार्थ व सच में भगवा हो रहा है इन हा कारण हमक  
 से निवृत्त तो उनका इन सलाह के विरुद्ध वह हा कोरिषा करने  
 लगे थे कि हमारे विरुद्ध घिसन वाने और विरुद्धारोने न जिसके  
 का मनुष्यदाम हा कुछ लेना है उनको तो सब हा पहिले दिला  
 है और फिर हमारे इस विषय में मनुष्यदाम का कुछ लेना है उनको  
 मनुष्यदाम हा ना बहुत उमरी पहिले का सलाह दिलाकर उन हा  
 क धनुषार मनुष्यदाम का बड़ी बहाल है और उनका मनुष्यदाम  
 क जिना इस विषय के नाम क दुल्हा लगे निश्चयने जिसका यह  
 गान सुनकर मैं मरने जिन्ने का बर्षा बड़ा करने लगे और यह  
 सलाह दिला कि जिनके क लगे मनुष्यदाम के काम जाना रहे  
 सलाह मनुष्यदाम तो उनका दुक बानी की दुकान में मरने मरने  
 लकना था और जिसो मरने की बर्षा ईमान बरी का लकना था,  
 इस सलाह मनुष्यदाम क सब निश्चयने ल बहुत कुछ बर्षा ले  
 और भवता काम काम का मरने दुक को निश्चय का यह हा  
 एक न निश्चय है बर्षा क बर्षा ले जाने के और हाथ का मनुष्यदाम  
 दिस १ ले यह मरने मरने और बर्षा कर ल है यह हाथ ले  
 और निश्चय का यह मरने का क है मरने मरने मरने मरने  
 मनुष्यदाम यह न मरने बर्षा और मनुष्यदाम के दुकान में मरने  
 मरने और मरने निश्चय क मरने बर्षा क निश्चय मरने कुछ ले  
 बर्षा क मरने ले





लदा हुआ लता बरि भी भी निता लुता उतन भी मगलानाम  
 व ही पुन १११ बला भीर पला बडा बलन से मला किया पर  
 मगलानाम १ जिन्ना का भी पाल का बुड खपा म किया भीर  
 म तो बाल पर दगा हा रल आलिख धरनी मुकहम का अपात्र  
 गयत बरब जमनादाम का उतन साथ ही जना पदा भीर सात्र  
 न मर पदा ठम पास ही रटना हुआ जमनादाम की ला  
 जिन्नी तर भी उतने साथ जाने पर राधा न हुर भीर मगुरादाम  
 दा मारिया देता हुई भवा भावों व पास हा घरा गई  
 मगुरादाम व पास जाकर जमनादाम रागी तो अपने देहों व  
 राग शाना था परन्तु यह अपना अधिक समय तो मंदिरजा में  
 पूजा पात्र करने भीर आप जपन में हा लगाता था भीर बापा  
 समय यह अपने देहा की दुःख पर बैठकर या मगुरादाम व पास  
 र वर हा बिनाता था मगुरादाम न उसका पहवार समझाया  
 भा रि मारी रा ए परिणाम बिगहने हे इस घालने नगर तुम  
 भा कोई छात्र मोन हुआ परन गों तो जी भा लगा रहे भीर  
 हा पैम को आमदा भा हीन गों लेकि जमनादाम ने उसकी  
 य बात बिलकु भी पाल न व बलि उतका हा ताने देने लगा  
 कि एकवार लगनती साहसर हाकर फिर उस ही शहर में माटे  
 गाल की दुका मोलकर बैठ जाना भीर जरा भी १ शरगाता तुम  
 ही शाना देता हे पर मैं तो अब मरा मरा भा सौ मा पा हे भी  
 दोनों हाथों स अपनी आरन धामे घेठा हे इस घालने मेरे स व  
 हो सक्ता हे रि मैं कोई छोटा सी हट्टा खोज पर बैठ जाऊँ मैं  
 अपना यकी य मरि माधक गमाऊ हा मुझे पत्र देकर एक म  
 प न्धे तरा कैद म जदर पड गया हे निसरा मुझे  
 यह नि ता पेशक नरे आधान रहकर और नेरा पक्षी  
 पर हा बिना पड़ेगे गाल दर जिनाने व पाछे ल  
 कि रिम तरह बिगड़ा को घनाया करते हे भी ।  
 पर जगया करी हे ।



पाने दिया करे और जो और उसके मकान का उगला भी लगा दे  
 न मारे मकान को सी सी बार धाया करे तो ऐसा करनेमें तो वह  
 मकान की तो कुछ भी बात नहीं करता है बल्कि अपने हाथों से हा अपने  
 मकान को साफ रखने और अन्य पुरुषों से द्रव्य करके उनको अपने  
 मकान को न छूने देने का मरना शौक हा पूरा करता है इस ही  
 प्रकार नहाने धोने, पुष्पांकुषा करना और छतवात निमानेमें भा घम  
 हा ख्याना भी नहीं हाता है बल्कि कुछ द्रव्यमात्र उठर बढ़ जाता  
 है, परन्तु हमें कि मैंने अपनी सारी उमर इस दाढ़ मास क देने  
 महाभयवित्र शस्त्र का शुद्धा में हा गया और अपने परिणामों के  
 सुचारने में कुछ भी बुद्धि न लगाए हाक है कि मैं जीवन के  
 सका को समझे बिना हा देखा हा घम करने लगा गया और  
 माय बन्ध करके मर्त्यों के हा पाठे बलन लग गया इसमें शक  
 नहीं है कि इसमें अधिक शेष तो मेरा हा है जिम्मे पर हा कुछ  
 भी छानबीन न करा और बस ही बेचार के तीर पर हा नाचना  
 गुरु करदों परन्तु हमने कुछ शेष उन लोगों का भा है जो जान  
 बूझ कर भी मुह बसा करन लग जाते हैं और हा में हा निताने के  
 बान्धे बाध दियाओं में भा घम बताने लग जाते हैं जिसमें हम  
 इस मूल शेष तो हमने आकर परिणामों की शुद्धी करने में  
 बलिष्ठ ही रह जाते हैं ।

• अब अमनादान सोचता हा कि उपवास करना तो गुरुस्थ के  
 वास्ते इस ही दिये रखा गया है कि उस दिन वह गुरुस्थ के गुरु  
 ही कामों को छोड़कर और जाने देने से जो बेचि कर होकर  
 साध दिन धर्म ध्यान में हो स्याते, इस ही कारण जो वा  
 धि तो ऐसे उपवास को बीमारों की सा सङ्ग हो बनाया है  
 उपवास करने वाला अपना गुरुस्थ का भा काम करना  
 सपना धर्म ध्यान में हो न लगा रहे, परन्तु हाक है  
 कबतक इस सङ्ग करने की ही धर्म माना और घम